फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 380 फरवरी 2020

33 हजार

मजदूर समाचार के जनवरी 2020 अंक की 33 हजार प्रतियाँ छपी। व्हाट्सएप और ईमेल पर भी प्रसारित हुआ।

छपी हुई या पी डी एफ रूप में आप मजदूर समाचार लेना-आगे बढाना चाहते हैं तो सम्पर्क करें। फोन/व्हाट्सएप : 9643246782

बैठ जानों के साथ

आजकल तो इधर-उधर, जहाँ भी देखो, फैक्ट्रियों में एक-दो घण्टे से एक-दो दिन काम बन्द करके बैठ जाना बहुत ही सामान्य है।

मुझे भी यह लगता है कि बातचीत में छिटक-छिटक कर यह गतिविधियाँ उभरती रहती हैं। और यह भी सामान्य है कि सभी जानते हैं कि यह बहुत कारगर साबित होती हैं।

हाँ। हमारे यहाँ पे भी ओवर टाइम के रेट पर चिट-पिट चल रही थी और फिर हम दो दिन फैक्ट्री में बैठ गये। बात आगे बढी है।

छोटी-सी बात हो या बड़ी से बड़ी बात। सिम्पल है। आसान है। लेकिन बातचीत में, सोच-विचार में, चर्चाओं में गाढापन नहीं ले पा रही है। धुरी नहीं बन पा रही।

बोलने में उत्साह होता है। एक उपलब्धी का भी भाव होता है। अपने को अनेकों में मिला और मेल की खुशी होती है। साथ-साथ होने का अहसास होता है। चेहरे बदल जाते हैं।

और यह भी बहुत सोचने वाली बात है कि किसी के पीछे बैठने की बात नहीं होती यहाँ। यहाँ साथ-साथ होने की बात होती है।

और कहीं पे यह एक गहरी भावना ले कर आती है कि हम एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। और सब से मजेदार यह होता है कि हम एक-दूसरे के लिये बोरिंग नहीं हैं।

इतने गाने, इतने मुहावरे, इतनी आपबीती, अनगिनत कहानियाँ, इतनी सोच एक-दूसरे के माध्यम से। इस दौरान उल्लास से जीते हैं।

यही देख कर लगता है कि आपस में पूछें कि हर वक्त ऐसा क्यों नहीं।

अभी एक दौर है कि हर जगह आत्मविश्वास से भरे लोग खुल कर चौराहों पर बैठ रहे हैं। दिन-रात। यह फैल रहा है। गति पकड़ रहा है।

नई भावना। नये लोग।

तुझे नहीं लग रहा कि यह बैठ जाना हमारे बीच में पिछले दस वर्ष से बहुत-कुछ कर रहा है। फालतू के भाषण। मैं की भाषा। और हम सब असहाय। बेचारे। यह सब साफ।

यथास्थिति। ऐसा ही होता है। ऐसा ही रहेगा। बदलने की कोशिशें सब की परेशानी। यह दलीलें इन बैठ जानों ने थोथी कर दी हैं।

मुझे लगता है कि बैठ जाने की हमारी परम्परा को गति देने के लिये यह समय बहुत माफिक है।

बहुत असुरिक्षत हैं कम्पनियाँ

कानून अनुसार मासिक तनखा = प्रतिदिन 8 घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के पैसे। कानून है कि ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से। गार्ड सामान्य तौर पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं और वर्ष के 365 दिन काम करते हैं। इसलिये सामान्य तौर पर गार्ड को महीने के जो पैसे मिलते हैं वो कानून अनुसार ढाई महीने की तनखा होती है। अतः अधिकतर गार्डों की तनखा 5-6-7 हजार रुपये है।

✶**लम्बोरगिनी** और **एस्टन मार्टिन शोरूम** (ए-16 मोहन को-ऑपरेटिव इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, दिल्ली) में एक कार तीन करोड़ रुपये से छह करोड़ रुपये की है। यहाँ 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में गार्ड ड्युटी करते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। त्यौहारी छुट्टी नहीं। पिवोट सेक्युरिटी के जरिये रखे गार्डों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं नहीं, और प्रतिदिन 12 घण्टे की ड्युटी पर 30-31 दिन के गार्ड को 9000 रुपये। एस आई एस सेक्युरिटी के जरिये रखे गार्ड को ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर, प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 10,500 रुपये।

✶**सेन्टिनल सेक्युरिटी सर्विस** द्वारा आई एम टी मानेसर में कम्पनियों को सप्लाई गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी। साप्ताहिक अवकाश नहीं। त्यौहारी छुट्टी नहीं। ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर, गार्ड को प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 12 हजार रुपये। और, हर महीने देरी से पैसे गार्ड के बैंक खाते में भेजते हैं। कम्पनी द्वारा चेक देने के बाद सेन्टिनल सेक्युरिटी 18 से 25 तारीख को पैसे खातों में भेजती है।

✶**एच आई एस एस** सेक्युरिटी सर्विस ने फरीदाबाद में कम्पनियों को करीब चार हजार गार्ड सप्लाई किये हैं। गार्ड 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। त्यौहारी छुट्टी नहीं। ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर, प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के गार्ड को 12 हजार रुपये।

✶**एस डी एस सेक्युरिटी** द्वारा ओखला औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली में कम्पनियों को सप्लाई किये गार्ड 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। त्यौहारी छुट्टी नहीं। ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर, प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के गार्ड को 16 हजार रुपये।

✶**आर वी सेक्युरिटी सर्विस** द्वारा फरीदाबाद में कम्पनियों को सप्लाई किये गार्ड 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। त्यौहारी छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के गार्ड को 17 हजार रुपये। इन पैसों में से ई एस आई तथा पी एफ राशि काटते हैं।

✶**जी 4 एस सेक्युरिटी** द्वारा पूरी दिल्ली में सप्लाई किये गार्डों को अकुशल श्रमिक वाला न्यूनतम वेतन दिया जाता है। जबकि कम्पनियों से ग्रुप फोर अर्ध-कुशल अथवा कुशल श्रमिक वाला ग्रेड लेती है। गार्ड 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करते हैं। अब महीने के 26 दिन ड्युटी। ओवर टाइम की अलग से स्लिप ग्रुप फोर सेक्युरिटी देती है। स्लिप में ओवर टाइम के घण्टे नहीं लिखे होते, मात्र राशि लिखी होती है। गार्ड को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

✶**एक गार्ड के शब्द :** ''फैक्ट्री में आग लग जाये तो मेरा काम आग को देखना है। जब तक फैक्ट्री जल कर राख हो तब तक मेरा काम उसे देखना है। फिर एकत्र राख को देखना मेरी ड्युटी है। और कोई पूछे तो मेरा काम उसे यह बताना है कि हाँ, यहाँ फैक्ट्री थी और यह उसी की राख है।''

बात मिल कर करने की

✶ **भारत इम्ब्राइड्री** (284 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम सिंगल रेट से। और उसमें भी हर महीने 700-800 रुपये की गड़बड़ी। वरकरों ने 10 और 11 दिसम्बर को फैक्ट्री में काम बन्द किया। पैसों की दिक्कत है कह कर मैनेजमेन्ट ने मजदूरों से फरवरी तक का समय माँगा।

✶**वीनस इन्डस्ट्रीयल** (91 सैक्टर-25, फरीदाबाद) फैक्ट्री में कम्पनी ने एक सुपरवाइजर का गेट रोक दिया। आठ दिन रोज लीडरों की कभी एच आर वालों से तो कभी डायरेक्टर से मीटिंग होती रही। कोई नतीजा नहीं। सैक्टर-25 वाली फैक्ट्री के साथ ही वीनस समूह की सैक्टर-24 फैक्ट्री में 22 जनवरी को सुबह वरकरों ने काम बन्द कर दिया। उत्पादन बन्द हुये तीन घण्टे में सुपरवाइजर को ड्युटी पर ले लिया।

✶**डी एच एल कूरियर** (सी-40 ओखला फेज-2, दिल्ली) में अक्टूबर 2019 से देय मँहगाई भत्ता कम्पनी ने नहीं दिया। पाँच सौ वरकरों ने 25 दिसम्बर को हँगामा किया। दिसम्बर की तनखा में 800 रुपये जोड़ दिये।

मतलब सिर्फ काम से

✶ **ज्योति एपरेल्स** (10 सैक्टर-5,आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में एक महिला मजदूर को बुखार हुई। टारगेट से कुछ कम उत्पादन हुआ। नौकरी से निकाल दिया।

✶**ब्राइट बिगिनिंग** (105 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 12-13 सौ वरकर दो शिफ्टों में कार्बन की-पैड मोबाइल असेम्बल करते हैं। टारगेट हाई। सुपरवाइजर और प्रोडक्शन मैनेजर चिल्लाते हैं। निकालते रहते हैं, मजदूर खुद भी नौकरी छोड़ देते हैं। बाहर होने पर किये काम के पैसे वरकर माँगते हैं तो कहते हैं कल सुबह आना। सुबह कहते हैं शाम को आना। शाम को कहते हैं कल आना। हम 7 को 8 दिसम्बर को सुबह काम करते दो घण्टे हो गये तब निकाल दिया था। आज 30 जनवरी तक किये काम के पैसे नहीं दिये हैं।

कानून के राज का हाल

✶**अनु इलेक्ट्रो** (43 सैक्टर-4, फरीदाबाद) प्लेटिंग फैक्ट्री में काम करते 50 मजदूरों में पुराने दो-तीन की ई एस आई है। पी एफ किसी वरकर की नहीं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की और रविवार को दिन में 8 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तीस-चालीस हैल्परों की तनखा 7000-7500 रुपये।

✶**पुनियानी इन्टरनेशनल** (बी-114 ओखला फेज-1, दिल्ली) लैदर फैक्ट्री में 12 घण्टे की शिफ्ट। तनखा दिल्ली में लागू ग्रेड अनुसार और ओवर टाइम पेमेन्ट सिंगल रेट से। इधर मैनेजमेन्ट ने मजदूरों से कहा है कि 1 फरवरी से ड्युटी ही 12 घण्टे की रहेगी। ओवर टाइम के कोई पैसे नहीं रहेंगे। नौकरी करनी है तो करो।

✶ **भारत इन्टरप्राइजेज** (98 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) लैदर फैक्ट्री में बैग बनाते करीब 300 वरकर एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे गये हैं। ठेकेदार कम्पनी परसन्टेज पर पचास ठेकेदारों में 300 मजदूरों को बाँट देती है।

✶**कॉन्टिनेन्टल ऑटोमोटिव** (16 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 150 परमानेन्ट मजदूर और दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे करीब 900 वरकरों के अलावा 250 आई टी आई ट्रेनी काम करते हैं। ट्रेनी तीन-चार साल ट्रेनी हैं।

✶**सेमटेक डिजाइन** (ए-36 हौजरी कॉम्पलैक्स, नोएडा फेज-2) फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने 23 जनवरी को नोटिस लगाया कि 24 और 25 को फैक्ट्री बन्द रहेगी और 27 जनवरी को खुलेगी। ढाई सौ वरकर 27 जनवरी को सुबह ड्युटी के लिये पहुँचे तो फैक्ट्री गेट पर ताला लगा था।

✶**विकास फोरजिंग** (173 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में दो-चार परमानेन्ट मजदूर और ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 250 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। गाली सिर्फ स्टाफ के 20-25 लोगों को। वरकरों को गाली नहीं।

✶**रेडिक्युरा** (बी-117 ओखला फेज-1, दिल्ली) दवाई फैक्ट्री में कम्पनी रोल पर 30-40 मजदूरों की तनखा 14 हजार रुपये। ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 15-20 को दस घण्टे ड्युटी पर महीने के आठ हजार रुपये।

✶**बायोवर्ल्ड** (14 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर) वेयरहाउस में 9 घण्टे की ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे नहीं। आठ-दस परमानेन्ट मजदूर हैं और 50-60 वरकर ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे हैं। मोबाइल की अनुमति नहीं है। अगस्त 2019 में कार्यस्थल पर नियन्त्रण के लिये 40 वरकर निकाले थे और नये भर्ती किये। ✶**सी एम आई** (71 सैक्टर-6 फरीदाबाद) केबल फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम सिंगल रेट से। डेढ सौ मजदूरों में 140 टेम्परेरी हैं। तनखा देरी से......

होण्डा मानेसर

निकाले जाने के खिलाफ 4 नवम्बर 2019 को होण्डा फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे कुछ मजदूर कुछ समय तक फैक्ट्री के अन्दर बैठ गये थे। अगले दिन लन्च के समय वरकर कैन्टीनों में नहीं गये। फैक्ट्री में एक स्थान पर एकत्र हो गये। उत्पादन बन्द। शिफ्ट समाप्ति पर मजदूर फैक्ट्री से नहीं निकले और दूसरी शिफ्ट के वरकर फैक्ट्री के अन्दर आ कर उनके साथ बैठ गये। फैक्ट्री गेट पर निकाले जा चुके सैंकड़ों वरकर एकत्र हो गये। होण्डा मैनेजमेन्ट ने परमानेन्ट मजदूरों से उत्पादन करवाया। ना के बराबर प्रोडक्शन। कम्पनी ने वर्क सस्पैण्ड किया। परमानेन्ट मजदूर 8 नवम्बर को फैक्ट्री में नहीं पहुँचे। ठेकेदार कम्पनियों के जरिये वरकर 5 नवम्बर से रात-दिन फैक्ट्री के अन्दर बैठे रहे थे। आठ नवम्बर से करीब 1500 वरकर फैक्ट्री के अन्दर और फैक्ट्री के बाहर उनके सैंकड़ों साथी। समर्थन और विरोध इनके इर्द-गिर्द। और, 18 नवम्बर तक वरकर फैक्ट्री के अन्दर बैठे।

इसका एक साइड इफैक्ट : होण्डा फैक्ट्री में मजदूर सप्लाई करने वाली ठेकेदार कम्पनियों ने इन वरकरों का हिसाब इस प्रकार बनाया है : ग्रेच्युटी राशि 30 से 70 हजार रुपये ; छँटनी मुआवजा 40 से 80 हजार रुपये; तीन महीने की नोटिस पे 38,550 रुपये ; बोनस राशि 4 से 6 हजार रुपये; एक्स-ग्रेशिया राशि 80 हजार से पौने दो लाख रुपये। कुल राशि दो लाख से पौने चार लाख रुपये। ठेकेदार कम्पनियों के जरिये होण्डा फैक्ट्री में रखे मजदूरों के पिताओं को भी पत्र भेज कर यह राशि बताई हैं। हर पिता को लिखा है कि अपने पुत्र को समझायें की रिजाइन पर हस्ताक्षर कर दे।

ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूरों को इस प्रकार से हिसाब मिलने की जानकारियाँ हों तो हमें भी बताना।

✶आई एम टी मानेसर में होण्डा फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे वरकर किसी की राजी से फैक्ट्री के अन्दर नहीं बैठे थे। किसी नेता के कहने पर नहीं बैठे थे। किसी न्यायालय के आदेश से नहीं बैठे थे। किसी कानून के अनुसार यह मजदूर फैक्ट्री के अन्दर नहीं बैठे थे।

✶लगता है कि नया धरातल बना है। फैक्ट्रियों में अस्थाई मजदूरों, कैजुअल वरकरों, ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूरों, टेम्परेरी वरकरों का धुरी बनना नई बात लगती है।

नया धरातल नये प्रश्न लाया है। किसी को भी नहीं पता कि अब राहें क्या हैं। नई सोच की जरूरत है। नये सवाल और उन पर व्यापक आदान-प्रदान की आवश्यकता है।

✶पन्द्रह दिन फैक्ट्री में रहते हुये अपनी ताकत और कम्पनी की कमजोरी को मजदूर अनुभव कर रहे थे। तो, बाहर निकले क्यों ? और निकले भी तो, आई एम टी मानेसर में हजारों फैक्ट्रियों में काम करते लाखों मजदूरों के बीच फैले क्यों नहीं ?

✶हमारी फैक्ट्री का मामला है कह कर बात को छोटा बनाना। यह आत्मघाती नहीं है क्या ?

✶उस फैक्ट्री की बात है कह कर दूर रहना। अपनी बारी में यह फँसने की राह नहीं है क्या ?

✶इन दस वर्षों में औद्योगिक क्षेत्रों में फैक्ट्रियों में बैठ जाने की गतिविधियाँ बहुत बढ गई हैं। मजदूरों के समूहों द्वारा एक-दूसरे को यह संकेत के समान होते हैं। लेकिन लगता है कि कई बार यह संकेत आपस में हम ठीक से पकड़ नहीं पाते।

और, जब आपस में संकेत ठीक से पकड़ पाते हैं तब बेंगलुरु में एक हजार से ज्यादा गारमेन्ट्स फैक्ट्रियों की एक लाख से ज्यादा महिला मजदूरों की तरह फैक्ट्रियों से बाहर निकल आने जैसी बात होती है। दो दिन के अन्दर भारत सरकार पीछे हटी।

✶होण्डा फैक्ट्री के अन्दर और बाहर जब ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूर बैठे थे तब आई एम टी मानेसर की इस, उस, और उस फैक्ट्री के अन्दर मजदूरों का बैठ जाने का सिलसिला बनता तो क्या होता?

अन्दर-बाहर मजदूर बैठे थे तब औद्योगिक क्षेत्र के आसपास की बस्तियों से लोग होण्डा फैक्ट्री पहुँचते तो क्या होता ?

पूरे आई एम टी मानेसर क्षेत्र की रंगत बदल जाती। दुनिया की रंगत बदलने में यह एक महत्वपूर्ण योगदान होता।

●●● होण्डा फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूरों के विरोधियों की कुछ बातें :

— सरकार ने फैक्ट्री पर पुलिस तैनात की। श्रम विभाग को सक्रिय किया।

— होण्डा कम्पनी ने वर्क सस्पैण्ड कर 8 नवम्बर को कैन्टीनें बन्द की। दबाव डालने के लिये भूखा रखना। यूनियन का महत्व बढाना। और, यूनियनों के जरिये 18 नवम्बर को वरकरों को फैक्ट्री से बाहर लाना। फिर, मामले को लम्बा खींचना।

— यूनियन ने 9 नवम्बर रात से होण्डा फैक्ट्री के अन्दर भोजन पहुँचाना आरम्भ किया। फिर प्रचार : फैक्ट्री के अन्दर मजदूरों ने आमरण अनशन शुरू कर दिया है। और 12 नवम्बर को भोजन अन्दर भेजने पर रोक लगा दी। अनशन की झूठ उजागर होने पर फैक्ट्री में खाना भेजना फिर आरम्भ किया परन्तु इतना ही कि लोग बस जिन्दा रहें। प्रचार : न्यायालय के आदेश पर 19 नवम्बर को पुलिस कार्रवाई कर मजदूरों को फैक्ट्री से निकालेगी। और, गुड़गाँव संयुक्त ट्रेड यूनियन काउँसिल नेताओं तथा श्रम विभाग अधिकारियों ने होण्डा गेट पर पहुँच कर, दो दिन में मामला हल की बातें कर 18 नवम्बर को अन्दर बैठे वरकरों को फैक्ट्री के बाहर बुला लिया। होण्डा फैक्ट्री से दूर बैठाया। दो दिन में कुछ नहीं। प्रदर्शन, ज्ञापन, भाषणों का घनचक्कर। फरवरी-आरम्भ तक, 75 दिन बीत जाने के बाद भी दो दिन पूरे नहीं हुये।

इस सन्दर्भ में होण्डा तथा अन्य फैक्ट्रियों के वरकरों के लिये मजदूर समाचार के मई 2018 अंक से एक कहानी :

एक कहानी

लीडरों ने घोषणा की : "दिल्ली चलो !" समूह का हुँकारा। लाठी-झण्डों के साथ मार्च आरम्भ।

दिशा दिल्ली की बजाय मथुरा की देख कुछ ने खुसर-पुसर की। साथ चल रहों ने डाँट-डपट कर उन्हें चुप करा दिया।

मोर्चा बल्लभगढ के बाद जे सी बी चौक पार कर पलवल की दिशा में बढता चला तो किनारा कर इधर-उधर से निकलने वालों की सँख्या तेजी से बढने लगी।

जो सिर पर कफन बाँधे थे वो मोर्चा के पलवल पहुँच जाने पर भी डटे थे। बहुत गहरी बात है। कमजोर लोग छोड़ गये हैं। कुर्बानी के बिना कुछ हासिल नहीं होता।

मोर्चा होडल पहुँच गया। "फुद्दु बना रहे हैं नेता" कह कर बलिदानी जत्था हट गया।

आस्था वाले, चमत्कार की आस वाले थके-हारे चलते रहे। मोर्चा के मथुरा की सीमा में भूतेश्वर के निकट पहुँचने पर आस्थावान भी भाग्य को फिर कोस कर निकल लिये।

भूतेश्वर में परचम गाड़ कर लीडरों ने घोषणा की : " दिल्ली पहुँच गये !!"

बातचीत के लिये उपलब्ध

✶ उद्योग विहार गुड़गाँव में वीरवार, 27 फरवरी को सुबह 7 बजे से 10 बजे के दौरान। ✶ आई एम टी मानेसर में शुक्रवार, 28 फरवरी को सुबह 6 बजे से साढे नौ बजे के दौरान। ✶ ओखला, दिल्ली में शनिवार, 29 फरवरी को सुबह साढे सात बजे से दस बजे के दौरान।

✶ फरीदाबाद में फरवरी में प्रत्येक रविवार को सुबह दस बजे से देर साँय तक। फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782 ईमेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

कुछ इमेल पते

ई एस आई महानिदेशक < dir-gen@esic.nic.in >
केन्द्रीय भविष्यनिधि आयुक्त < cpfc@epfindia.gov.in >

इक्कीसवीं सदी के मुखर युवा

राजस्थान निवासी एक परिचित की दिल्ली में श्रद्धाँजली सभा के अन्त-से में एक युवा ने धक्का-सा करके बोलने का समय ले कर कहा :

'' याद रखिये । जब किसी भी बात को रोकना हो तो उसे विचार बोल दो ।

''.... एक लाइन इस मंच से बहुत जबरदस्त बोली गई कि मैं मरने को महत्वपूर्ण नहीं मानता । मैं जीने को महत्वपूर्ण मानता हूँ ।.. ..... तो जीवन जीना विचारधारा है या वास्तविकता है ? यह एक सवाल है । [आवाज : दोनों है ।]जीवन जीना [आवाज : विचार भी है, वास्तविकता भी है ।] राइट ।

'' तो यहाँ पर बात यह निकल के आ रही है कि हजारों सालों से इन बुद्धिजीवियों की पूरी जमात यह कोशिश कर रही है कि दुनिया को विचारों से चलाया जाये । लेकिन मैं एक नौजवान यह कहना चाहता हूँ कि यह जो अर्थ (पृथ्वी) और इस पर जो जीवन है वो किसी विचारधारा का मोहताज नहीं है । एक पेड़ अपना काम कर रहा है । वो सोच के नहीं कर रहा है । एक बच्चा खाना खा के अपने पानी का पेशाब बना रहा है । वो किसी भी विचारधारा का मोहताज नहीं है ।

''.... दुनिया के अन्दर सबसे बड़ी गड़बड़ी यह हो गई कि हम ने विचारधाराओं के आधार पर इस दुनिया को चलाने की कोशिश की । और हम ने हर उस व्यक्ति को महान बना दिया जिसको हम ने आगे नहीं बढाना था । यह दूसरी गलती है । उसकी बात नहीं बढानी थी, आदमी को बड़ा कर दिया ।

'' और यह कहानी कोई एक-दो साल की नहीं है । यह बारह-पन्द्रह हजार साल पुरानी बीमारी है जिससे हम लड़ रहे हैं । और हम हर बार यह कोशिश कर रहे हैं कि कोई एक ऐसी विचारधारा निकलेगी जो पूरी दुनिया का कल्याण कर देगी ।

''लेकिन एक छोटी-सी बात मैं यहाँ कहना चाहता हूँ ।....अनुमति है ? [आवाज : समय की मर्यादा का थोड़ा ध्यान रखें ।] बस दो मिनट । सच्चाई यह है कि पूरी दुनिया को बुद्धिजीवियों से बचाना है । अगर कड़वी ना लगे तो अब इसके पीछे मेरा लॉजिक क्या है, वो मैं कहना चाहता हूँ ।

'' मैं सोलह साल का नौजवान था । मेरे अन्दर एक तड़फ थी ।. ...... मैं तड़फता था अपने आसपास के एरिया को देख के ।.... दुनिया के अन्दर यह है क्यों ? एक सवाल था मेरे अन्दर ।

''तो जैसे ही मैं बाहर निकला, मुझे बुद्धिजीवियों ने पकड़ लिया । किसी ने मुझे मार्क्स समझा दिया । किसी ने लेनिन समझा दिया । किसी ने भारत समझा दिया । किसी ने यहूदी समझा दिया । किसी ने जैन समझा दिया । किसी ने कुछ समझा दिया, किसी ने कुछ समझा दिया । तो मैं हो गया कनफ्यूज्ड ।

'' कि साला करना क्या है दुनिया के अन्दर । फिर मेरे को एक बात समझ में आई कि दुनिया में आस्तिक-नास्तिक कुछ है ही नहीं, सब कुछ वास्तविक है ।..... सब कुछ.... मेरे सामने है । और मैं इस प्रकृति की व्यवस्था के अन्तर्गत जी रहा हूँ ।

'' तो दुनिया के अन्दर जीने की व्यवस्था नहीं हुई । हर व्यक्ति एक बात बोल रहा है कि तुम्हें देश और समाज के लिये मरना है । और यह बात बारह हजार साल से बोली जा रही है ।

'' और जो भी बुजर्ग खड़े हो के मंच पे बोलता है वो ये कहता है कि जो भी काम करेगा वो नौजवान करेगा । लेकिन एक बात मुझे समझ में नहीं आई कि पिछले नौजवानों का क्या करा तुमने?..... सच्चाई यह है कि हम ने नौजवानों की बात को आज तक सही मायने में सुना ही नहीं । हम ने अपनी किताब पकड़ा दी । अपने वेद पकड़ा दिये । अपनी कुरान पकड़ा दी । अपनी गीता पकड़ा दी । अपनी रामायण पकड़ा दी । कुछ ना कुछ, कुछ ना कुछ पकड़ा दिया । उसकी बात सुनी नहीं कि वो क्या चाहता है ।

'' तो दुनिया के अन्दर विचारधाराओं का अन्त होना है । यह आप समझ लो । और दुनिया के अन्दर जीवन धारा चलेगी क्योंकि यह दुनिया विचार से नहीं बनी है ।..... जीवन की व्यवस्था जो है इस अर्थ (पृथ्वी) की, कुदरत की, जो भी आप बोलो, यह देन है जो स्वयंस्फूर्त व्यवस्था में संचालित है । और हम ने क्या किया ?

'' विचारधाराओं की आड़ में संगठन खड़े कर लिये । और संगठन खड़े करके हम ने मुद्राशाही का आतंक खड़ा कर दिया, पूरी दुनिया के अन्दर । और मुद्राशाही का आतंक आज इतनी जोरशोर पे चल रहा है कि कोई आदमी तुम्हारी बात सुनने को तैयार नहीं है ।.. ...... [आवाज : समय ।]

''..... सिर्फ एक छोटी-सी बात.... जीवन मेरे लिये महत्वपूर्ण है क्योंकि जीवन एक सन्देश होता है । और उस सन्देश को हम स्वीकारें तो शायद जीवन के प्रति हमारी श्रद्धा हो और जीवन में हमारी आस्था हो । हम ने क्या कर दिया है कि मुर्दों में आस्था पैदा कर दी, और मुद्रा की मान्यता पैदा कर दी, और शासन के कानून खड़े कर दिये दुनिया के अन्दर ।

'' मुर्दों में आस्था , मुद्रा की मान्यता, और शासन के कानून । इन तीन चीजों से हम ने बारह हजार साल से पूरी दुनिया में आतंक मचाया है । ना हम खुद जीये, ना हम ने समाज को जीने दिया । और सब से बड़ी बीमारी है विशेषता की । यह जो हम व्यक्ति को महान बना देते हैं यह पूरी दुनिया के अन्दर अपराध है । कोई महान नहीं पूरी दुनिया के अन्दर । एक चींटी है, वो चींटी भी अपना काम कर रही है । एक आदमी भी आदमी का अपना काम कर रहा है । आदमी का काम क्या है यह दुनिया में अभी तक पता नहीं लग पाया है कि आदमी का सही में काम क्या है ?...... मैं जिन्दा की जय करता हूँ ।''

शासन के लिये सत्ता के लिये फ्रेमिंग

● भारत में पाँच वर्ष पहले शासन के लिये, सत्ता के लिये राष्ट्रवाद पर दो पक्ष : 1.) हम राष्ट्रवादी हैं और हमारे विरोधी देशद्रोही हैं ।

2.) हम राष्ट्रवादी हैं और हमारे विरोधी अन्ध-राष्ट्रवादी । यह लोग देश को बर्बाद कर देंगे ।

● इधर संविधान पर दो पक्ष : 1.) हम संविधान के सम्मुख शीष नवाते हैं । हम संविधान के अनुसार शासन कर रहे हैं । देश को शक्तिशाली बना रहे हैं । नया इण्डिया बनाना है ।

2.) यह संविधान-विरोधी हैं । यह देश को तोड़ने में लगे हैं ।

● शासन के लिये, सत्ता के लिये राष्ट्रवाद और संविधान अनिवार्य आश्यकतायें लगते हैं ।

★★★ जबकि :

मण्डी-मुद्रा की शक्ति बढने के साथ तीन-चार सौ वर्ष पहले विश्व में संविधान और कानून का राज उल्लेखनीय बनने लगे थे । ईश्वर-अल्लाह-गॉड के स्थान पर शासन के, सत्ता के स्रोत बने संविधान और कानून । संविधान अनुसार शासकों में परिवर्तन कानून के राज में मान्य ।

और, मेहनतकशों में मण्डी-मुद्रा और मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन के विरोध तथा नई समाज रचना के लिये दुनिया-भर में गतिविधियाँ गति पकड़ती आई हैं । सामाजिक गतिक्रिया के चलते इधर संसार-भर में यह स्थिति बनी है कि कानूनों का उल्लंघन सामान्य बन गया है । आज कानूनों का पालन अपवाद है ।

ऐसे में हम जीवन्त समय में हैं । सात अरब लोगों द्वारा यह नई समाज रचना की वेला है ।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया । RN 42233
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट ।